मार्गदर्शन :

डॉ० एन० सरवण कुमार, भा०प्र०से०
जिलाधिकारी-सह-अध्यक्ष, आत्मा, पटना

श्रीमती सीमा त्रिपाठी, भा०प्र०से०
उप विकास आयुक्त-सह-उपाध्यक्ष, आत्मा, पटना

प्रकाशक :

श्री मनोज कुमार
परियोजना निदेशक, आत्मा, पटना

विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें–
श्री बृजेन्द्र मणि, उप परियोजना निदेशक, आत्मा,
विकास भवन, समाहरणालय परिसर, पटना
दूरभाष : **0612-2219166, 9471002668**

Vidya Printers, Shivpuri, Patna-23

प्रसार पुस्तिका सं०-6, 2013-14

बिहार सरकार

कृषि विभाग

जौ की उन्नत खेती

कृषि प्रौद्योगिकी प्रबन्ध अभिकरण (आत्मा)
समाहरणालय, पटना

जौ प्राचीन काल से खेती किये जाने वाले अनाजों में से एक प्रमुख है। इसका उपयोग प्राचीन काल से धार्मिक संस्कारों में होता रहा है जौ स्वास्थ्य के लिये जहाँ लाभदायक है वहीं व्यवसायकि दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण फसल है। जौ फसल गेहूँ के अपेक्षा अधिक सूखा सहनशील होती है। वर्तमान समय में अनेक कारणों से जौ का रकवा घटता जा रहा है परन्तु सुखाड़ की स्थिति में जौ की खेती किसानों के लिये निश्चित तौर पर लाभप्रद साबित हो सकती है।

भूमि :– इसकी खेती सभी प्रकार की भूमि में जा सकती है। समतल उत्तम जल निकासयुक्त दोमट मिट्टी में जौ की अच्छी फसल होती है।

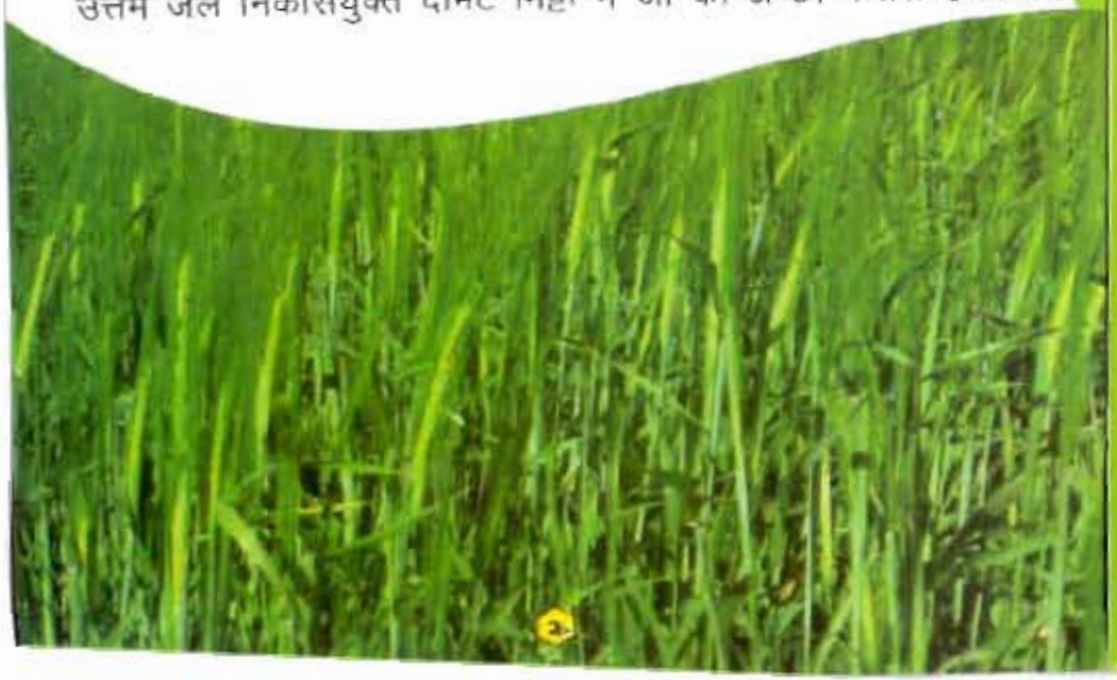

भूमि की तैयारी :– नमी न होने की दशा में खेत की हल्की सिंचाई कर बरकनी आने पर 2–3 जुताई कर खेत को मुलायम बनाकर पाटा चला देना चाहिये।

उन्नत प्रभेद :– ज्योति, डी.एल. 36, रंजीत, बी.आर. 32, रत्ना, के.125, आजाद तथा बी.आर.31 आदि जौ की उन्नत प्रभेद हैं। किसान अपनी आवश्यकता के अनुसार स्थानीय कृषि वैज्ञानिकों की सलाह पर उपरोक्त में से किसी प्रभेद का चयन कर सकते हैं।

बीज दर :– सिंचित अवस्था में 75 से 80 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर एवं असिंचित अवस्था के लिये

100 किलो ग्राम बीज प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है।

बुवाई का समय :– सिंचिंत अवस्था में जौ की खेती के लिये 10 नवम्बर से 30 नवम्बर तक का समय उपयुक्त होता है तथा असिंचिंत दशा में अक्टूबर के अंतिम सप्ताह से नवम्बर के द्वितीय सप्ताह तक बुवाई कर सकते है।

उर्वरक प्रबंधन :– जौ की सिंचित खेती के लिए 60 किलोग्राम नेत्रजन, 30 किलोग्राम स्फुर, 20 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। नेत्रजन की आधी मात्रा, स्फुर और पोटाश की पूरी मात्रा बुवाई के समय कूड में डालें। नेत्रजन की शेष आधी मात्रा प्रथम सिंचाई के समय उपरिवेशन करें। असिंचित अवस्था के लिये 30 किलोग्राम नेत्रजन, 20 किलोग्राम स्फुर, 20 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर बुवाई के समय खेत में डालें।

सिंचाई :– जौ की खेती में सिंचाई की अधिक आवश्यकता नही होती है फिर भी 02 सिंचाई करके बेहतर उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। प्रथम सिंचाई बोने के 30–35 दिन बाद तथा दूसरी सिंचाई बुवाई के 55–60 दिनों के बाद करनी चाहिए।

निकाई – गुडाई :–निकाई–गुड़ाई के लिये जहाँ तक संभव हो हैंड हो चलाकर खेत को खरपतवार से मुक्त कर लेना चाहिए। ऐसा न होने की दशा में ही खरपतवारनाशी का व्यवहार करें।

फसल सुरक्षा :–

आवृत कंडुआ रोग – इस रोग के प्रकोप से बालियों में दाने के स्थान पर फफूँदी के काले जीवाणु बन जाते हैं जो मजबूत झिल्ली से ढके रहते हैं।

रोक थाम – यह बीज जनित रोग है इसलिए प्रमाणित बीज का उपयोग करना चाहिए। कार्बेण्डाजिम या दूसरे उपलब्ध फफूँदनाशी से बीज को उपचारित कर बुवाई करना चाहिए।

उपज – सिंचित अवस्था में 35 क्विंटल प्रति हेक्टेयर एवं असिंचिंत अवस्था में 15–20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उत्पादन प्राप्त होता है।

मुख्य बिन्दु :–

1. उपयुक्त प्रजातियों का चयन कर शुद्ध एवं प्रमाणित बीज बोयें।
2. बीजों को फफूँदनाशी से शोधित कर बीज की बुवाई करें।
3. मृदा परीक्षण के आधार पर संस्तुति के अनुसार उर्वरकों का संतुलित प्रयोग करें।
4. क्रांतिक मूल अवस्था में तथा फूल आने के समय खेती में नमी का रहना आवश्यक है।

जब दिन में तेज हवा चल रही हो तो फसल की सिंचाई देर शाम या रात में करनी चाहिये।